

११२०११-११३८

॥श्रीरामविजयपर्वतज्ञायायप्रारम्भः॥



Joint Project of the Rajawade Sansodhan Mandal, Dhule and Yashwantrao Chavhan Pralishthar, Mumbai

॥श्रीराम ॥

॥१॥

(2)

श्रीगणेशायनमः ॥ श्रीसांबायनमः ॥ जैसेंदुर्बका च्याग्रहाप्रति ॥ नवीर्जई
समर्थसोयरेज्ञादरेयेति ॥ त्यादिपाहुणेरकेरावयानिश्चीति ॥ नां
हिंश्लकोलयांते ॥ १॥ तोभगकंदमुके ज्ञायन ॥ पुढेठेविप्रितिकरन ॥
तैसेंदुप्राकृतबोलणपुणी ॥ संतो पुढेसमपिष्ठेते ॥ २॥ पयाक्षीपुढेठेवि
लेतक्र ॥ कीसुरामिपुढेभज्ञाध्यातरा कोभमज्ञापुढेसारवरा ॥ नेउनी
यांसमपिली ॥ ३॥ कुवेरपुढेकवा जापा ॥ रंकेठेविलिंनेउन ॥ द्वि
तकक्षावयानोडिणिरमण ॥ नवगोतपुढेठेविलें ॥ ४॥ कल्पद्रुमपु
ढेवदीरकका ॥ वैरागराकंठोस्फटाकमाका ॥ मक्यानकाससुगधङ्ग ॥ ५॥
तका ॥ नींबकाछंचन्चीलिं ॥ ६॥ जाक्रल्लाडप्रकाइगभीस्ती ॥ त्यासवा
वाक्षिज्ञेयकारति ॥ परितोघेतदरवानभाल ॥ तैसेंचयेयेंसतिंकेलें ॥ ७॥

स

(२८)

तैसेबोलेहरसहीन॥ परिसंतासजावजतिपुर्ण॥ येकुणिसावेजाध्याईकथ
म॥ कायजालंपरिसोवं॥ अअसुरांसत्रासुनहुमंत॥ सभानागविल
समस्त॥ शितेलागिंशोधीहुमंत॥ गोलारेउरपेंची॥ ८॥ लंकेच्चोगोपुरेसम
स्त॥ शितेलागिंशोधीहुमंत॥ जेसारनापरिष्करस्ति॥ रत्नञ्जपुरेल
हारपलं॥ ९॥ धांडोक्किलसमस्तनगरि॥ कोरेनउमगेजनककुमरि॥ तों
जेधेहुतिरावणमंदोदूरि॥ त्रेधेहुमंतपवला॥ १०॥ तंवेताइकारिज
नक॥ हवनकरिवीच्छनविनायका॥ वदिनिजकानीःशंक॥ पद्मराणीमंदो
दूरि॥ ११॥ उपरमाऊगोपुरें॥ नरणिवसाच्चोसुहरमंदिरें॥ ऐशिसहस्रञ्जंतः
पुरें॥ शितेलागिंशोधीलीं॥ १२॥ सककस्त्रियांच्याधुगटांत॥ निघोनपाहुहु
मंतमतोमांहाराजईद्वीयेजोत॥ कामरकततोउरिं॥ १३॥ रावेणेआणि

॥ अरीमन ॥

॥ १२ ॥

(3)

४

ल्या। नारि॥ नागिणिपद्मीणि कोऽन्नरि॥ ज्यान्वीयापद्नरवावरि॥ १३ सरर
जोसुवास॥ १४॥ ऐशासुद्दरीदेरवता॥ कासमोहितमकेहुनुमंता॥ तोराघव
श्रीयेविरक्त॥ उध्वरेतावज्ञेहुडि॥ १५॥ घटमटामाजिव्यापुन् वेगकें
असेंजेसेंगगन॥ तेसाउंजनीच्चानंदन॥ लोकांतवर्तीनवेगठा॥ १६॥
स्त्रीयाझोधील्यासमस्ता॥ तोमंद्रादादेजेथंकीद्वीस्ता॥ तेथेंयेउनहनुमतं
उभाराहीलाक्षेभरि॥ १७॥ रपेदरवानमंदादरि॥ मुण्ठेन्वहायेजनककु
परि॥ नीजलिपवित्रशेजेवरि॥ धर्मिवताल्पणोनीया॥ १८॥ सत्तियादि
रोरनदितासति॥ परमपुत्रपांच्चीदशतकी॥ प्रजआजसेटलनी
श्चीति॥ ल्पणोनमारत्तिनोचति॥ १९॥ तोंहोमविधीसंपादुन्॥ तथेंआ
लादीपंचवदन॥ तोंमंदोरिउठोन॥ पायधुनरावणाच्च॥ २०॥ ऐसेंदेखो

॥ अा॒२०॥

नीङुमंता॥ क्षोभलाजे सक्रतांता॥ स्त्रेजानको हेयथार्थ॥ वश्यजालिरावणोत्त
 ॥२१॥ रामवन्ननभारवि प्राप्ति॥ शितेचेवदनीकपुरद्रष्टि॥ मगसुखाजंवक्ति
 रितगति॥ मदोदरिच्यायात्तला २२॥ दुरवन्नद्यानपाहिक्तो॥ तोंदुर्गधीनें मनवि
 टेलं॥ स्त्रेमध्यपाने येसें केलं॥ उमयविभिक्तो नीयां॥ २३॥ भींतीसलावि
 ताकान॥ स्त्रेण होतना हिंनासम् ॥२४॥ रावणासमिनली पुर्णा तेथे समरप
 कायसं॥ २५॥ तोंरावणजापि मंहे दोघं निजलिं शोजवरिआ शुशुत्यी
 अवस्थे माज्ञारि॥ नीमग्नजालि॥ २६॥ मनीवीचूरिहनुमत्तेन्नया
 होघांसउचलुनी अकस्मात् पकीस्कीदशिक्या विंयथार्थ॥ पाहिलरघुना
 धदोघांतेन्नरघुनाघालो नियां चेत्तुपाषाण॥ दोघां चेद्येत्यथेन्नप्राण ॥ २७॥ अकस्मात्ताजबजोनी॥
 सेवीन्वारिवायुनेनपतोंतेथें असुरवतलिं॥ २८॥ अकस्मात्ताजबजोनी॥

(3A)

॥श्रीरामवीज

१३५

(६)

मंदोदरिबैसलि उठोनि ॥ आक्रोशें हाकफेडुन ॥ वक्षस्थकबडवि त ॥ २४ ॥
सर्वेचमाहाशब्दुकरित ॥ दद्वाकंठनिन्याहातधरित ॥ मयजास्त्रेण ऊंतांत्वरि
त ॥ श्रीताद्याविहोरामाची ॥ २५ ॥ आजीवीलोकीलेंदृस्वप्ना माझीगक्षम
दिग्किंजकेन ॥ येकवान्नरेयेउन ॥ अशोकवनवीष्यं शिलें ॥ २६ ॥ तणेंव
धीला अरवया सुता ॥ समरिंगांजीलाइड जील ॥ घेउन आलाजनकजासात
दृक्खञ्जुतनवर्णवे ॥ २७ ॥ शिक्रियुजउनसरितानाथा ॥ सुवेकेशिआलाजव
नी जाकात ॥ रावणचुभकरणईजीत ॥ वधोनवीजईजाहाला ॥ २८ ॥ करिताप
रदोरचाजभीलाष ॥ कोषकधीं पावलायशा ॥ मानवनकें राघवेश ॥ पुराणपु
रषबवतरला ॥ २९ ॥ उदुरिबांधोनीदृठपाषाण ॥ केविंतरेलअगा धजीवना
बकंचकेलंवीषपान ॥ लासकल्याणमगकें चें ॥ ३० ॥ रविदिरांगरात्रेजवरि ॥
॥ ३१ ॥

कैसा प्राणि सुरेवं नीद्रा करि ॥ मां हाँ सर्पा चे सुखा भीतरि ॥ हस्त घालि तां जेर
 कैंच्चा ॥ ३६ ॥ शार्दुक कर गोला प्रकाटन ॥ या चे जाकी माझी जाऊन ॥ नादू
 न स्पृण छै मकल्याण ॥ तो पुरुष के साकं चेळ ॥ ३७ ॥ तु त्वो जरिस वर्वी शिजीं
 किलं ॥ परिराघवांशीतै सैनचालं ॥ पुर्ण ब्रह्म हँडु अवतरलं ॥ भक्तजना
 द्विरक्षावया ॥ ३८ ॥ यालागिं द्वौ पंचवट ता ॥ मिशरण जात्यं रघुनदना ॥ देउन
 तयाची अगना ॥ चुउदान सागी न जे ॥ ३९ ॥ मनि वीचा रिकं काषति ॥ ई
 चैव चन सर्वमानिति ॥ नेउनदूर्कुल ॥ तप्रति ॥ भल या स आज्ञाकरोनीयां
 ॥ ४० ॥ रावण लगे मंदो दरि ॥ तुं सर्वधाचीं ता न करि ॥ उदुईक नेउन वीडु
 कुमरि ॥ जनक जामाता अपिनि ॥ ४१ ॥ पांच कोटि राज्ञ सगण ॥ और शोक व
 नाभों वतेरक्षण ॥ तयां शिसां गोन पाठ विराजूण वण ॥ रात्र दिवस जलत न जास ॥ ४२

५४

श्रीराम ॥

११४ ॥

(5)

बीभीषण कुभकर्णा द्विद्विजीत ॥ हे प्रयज्ञे समानी तिबहुता यांचा वीज्ञा
सनधरा वायथोर्थी ॥ नेउनद्विलजान कितें ॥ ४३५ हे सैसमस्तवतैमान ॥ ॥ वीजई ॥
वायुसुतं केलं अवण ॥ लृणहे मंदो दूरि सतिपुणी ॥ ईन्या स्मरण दोष नुरे ॥ ४४
तों द्वितीसल्पणे दुश कंदुरा ॥ अशोक वना शिजावें सत्वरा ॥ जनका त्वं जन्मास
माचार ॥ घेउनी ये ईत्वरेने ॥ ४५ ॥ ता काळू न्याकोलिदुति ॥ तीप्रागें जात
मार्तति ॥ जालाजशोक वनाप्र ॥ ता नंदन्चोतिं न समायें ॥ ४६ ॥
तों अशोक दृशान्च तकिं ॥ ध्यानं तव सल्ली मैथुकिं ॥ दुतिपरतत्तिलिता
लकाकिं ॥ हनुमंततेयें राहीला ॥ ४७ ॥ जय जय ब्रवो ध्यानाथ ॥ लृणोनी नान्यो ॥ ४८ ॥
लागलाहनुमांत ॥ लृणध्यन्यमीआ जीयथार्थी ॥ जगन्मातादेरवीलि ॥ ४९ ॥
पुष्टनान्विकउनीकडी ॥ तों विटाविडेक्षेप्रोडे ॥ चक्राकारमारितउडी ॥

॥ज्ञान०॥

रामनोमंकेरोनीयां॥४९॥ चंडुकेपोडुमारती॥ तोंरामनोमंकक्षगर्जति॥ पंच
मस्वरेंपक्षीयुमति॥ राघवस्मरणंगजोनीयां॥५०॥ ल्रणेहेहायशितासति॥ पुरा
णपुरषांचीद्वाक्तो॥ सुटलिकर्पुराचीद्वति॥ पाषाणस्मरतिरामनाम॥५१॥
मुगमदाहनीविशेष॥ शितेचेत्तागिचासवास॥ अद्वाकवनिजासमास॥
दुमदुमौलेतणांचो॥५२॥ तेथेंक्षणजेसत्रीजटा॥ तेणहिराघविधरिलीभक्ति॥
बापसत्संगाचामहिमामोटा॥ दुछपापेषासङ्कावप्रघटा॥५३॥ यावरिबंज
निहदयरल्न॥ गुत्पर्स्पेंजवक्येउत्तमा नानकिचेवदुनिचरण॥ मुद्रीकापुठें
ठेविलि॥५४॥ ध्यानस्त्वैसलिइतासति॥ मानशिंचींतुनरघुपति॥ पुठें
उभाज्जसमारति॥ बंधांजुक्तिकरोनीया॥५५॥ इहिरेपाशीरवगेद्॥ किं
आपर्णपाशिंनदिकस्वरोकिंशाचीपुठेंजयंतपुत्र॥ उभागोकेप्रीतिनें॥५६॥

SA

॥श्रीराम॥

१५॥

६

लसोक्तवृद्धपेपिष्ववरि॥तेसाजार्चिसनमस्तुरि॥मगत्याभशोकर्द्धिंसउकरि॥
राघवप्रियवक्तव्यला॥५७॥ईकउतमालनिक्तसांवका॥ध्यनिविलेकितनकबाका॥तों
जवतारमुद्रालेवेका॥सब्यकराएंलियेदिसेना॥५८॥मुटिकानहिसेह्यणोना॥श्रवणीरि
म्बुषाउधीउनयन॥तोंमुटिकापुटेंचिजाया॥हैहिष्मानपडिलिजस॥५९॥मुटिका । विर्जी॥
हेखलांतेवेकिं॥हृत्तिंभालिंगितवक्तव्यका॥विमठांबुधाराश्रवतिनेत्रकमिं॥जान
किन्ध्यासुटन्या॥६०॥ह्यणेसांउनिरचानमातें॥मायकैशिभालिसयेथें॥रामजाणि
सेमित्रातें॥त्यजुनिकैशिभालिस॥६१॥जगद्ध्यतोश्रीराम॥जोन्तरत्वरफङ्कितस्य
॥त्याचिवातोस्वस्तहेम॥सांगमुटेमजपाइ॥६२॥तोंरक्षणरिनिशाचिर॥वेथेहोला ॥५॥
दुराञ्च्यरि॥विक्राञ्छपत्याभवसरि॥शितडवक्षियातन्या॥६३॥कांगेरउतेसत्यण
ज॥पसरोनआन्नाविशाक्तवद्वन॥तुजअच्यिंसुहुतोउन॥कुटकेकर्णनिलिकप्राय॥६४॥

कैचारामतमालनिका ॥ तुरावणाशीद्यलिंमाका ॥ राहशिरिकीरतिकोन्हाका ॥ शिलेसोंव
 स्यामिकेनियां ॥ ४५ ॥ बाबरस्त्रोटमयकरा ॥ कपाकिंचर्विलादोहुरा ॥ लेबस्सनिविदा
 क्षुदरा ॥ पर्वतमाजिसाटवति ॥ ४६ ॥ उत्तराच्छेषंदेखेनिहनुमंता ॥ पुछसेडिलेभक्तस्मा
 ता ॥ राहशिरिझोटिन्यासमस्ता ॥ प्राणासबहुतमुक्तज्ञा ॥ ४७ ॥ राहशिरिणफिरिविनिडेके
 ॥ पुछउआंवठिलेगके ॥ येक्ष्वपनिलजनकज्ञा ॥ राहसंमालेजाह्नाशिं ॥ ४८ ॥ निमाल्या
 बहुतराहसिणि ॥ उरन्यालालगतिति-चाणि ॥ किलेकेगन्यापकेनि ॥ हराकेदरा
 शिसांगावया ४९ ॥ हहर्देवोधरस्यावत् ॥ जाणा ॥ क्त्रांतिभुलिर्द्धावासना ॥ जाशाम
 नसात्रुह्याकन्मना ॥ पङ्कतिजैशाह्नयाधी ॥ ५० ॥ जैशापकाल्यानिद्वाचरि ॥ जानिल
 मुद्रिकेरिंविचारकरि ॥ इरयुलिरविहारि ॥ कोठेसांगमुद्रिके ॥ ५१ ॥ मज्जालिंगितां
 श्रीरामचन्द्र ॥ कंठिनसाहृचहोर ॥ आलंगिरकाननेसमुद्र ॥ दोघामध्येष्ठियेला ॥ ५२ ॥

॥श्रीराम॥
॥४॥

(४)

वल्लीकानेभाष्यकेले ॥ तेंकायब्यर्थेगेले ॥ येकबळियाक्षिप्यउबवहिलेमा लंकानगरजाक्षि
ल ॥ ७३ ॥ मजदेउनिसमाधान ॥ सवेचिबाणिलरघुनंदन ॥ पाषाणिसागरबुजोन ॥ हशव
हनामसिलपै ॥ ७४ ॥ तोंमुद्रिकानेदिवतिवनन ॥ ह्यणेमजकठलिगेतुजिरघुण ॥ मास्या
वियोगेंकरन ॥ देहराघवेत्यागिता ॥ ७५ ॥ किंयगियांचेघनियुंतदा ॥ किंप्रकाञ्चा ॥ विडई ॥
धावण्याघांवला ॥ किंसौमित्रेमाशानानेला ॥ योच्छिक्किलेसास्मृणोनियां ॥ ७६ ॥ अहा
श्रीरामारडिवनेत्रा ॥ हशकंठरिपुवेष्टुता ॥ पुढेयाठविलिहकांमुडा ॥ कोण्याविचा
रेकरनियां ॥ ७७ ॥ उपानकरवेमजर्वी ॥ तोंयेउनमाशावधकरि ॥ मिबुडाल्लेचिंतासा
गरि ॥ कठिंबाहेरखेरने ॥ ७८ ॥ मृगत्वचेचिक्कुक्किर्द्धिल ॥ हात्तिव्यायवडलामु
ष्टिं ॥ म्यापापिणिनेतेचवेक्का ॥ सौमित्रविरच्छक्येला ॥ ७९ ॥ म्यासायुचेंछक्कणकेले ॥
तरिरात्साहतिंसापउल्लं ॥ विच्छवरपउजान्नें ॥ त्याचदोषेक्करोनियां ॥ ८० ॥ ४॥

॥आना२॥

जेसाधुचेष्ठकणकरिते ॥ मजैरेसंदुःखपावति ॥ अनिजातिलजयोगति ॥ माहाअवर्थि
 पठलिता ॥ ४॥ ईसादेभावलेयक्षणि ॥ दवित्रिमुवनपतिचिराणि ॥ ह्येआनाहेहुठेउनि ॥ का
 यकारणबरसेपै ॥ ५॥ शिनदेवोनिविकृष्ण ॥ ह्यगर्भिंजनिचाबाढा ॥ गयनभारंगिलेस
 ळा ॥ रथविलासमिर्मकडा ॥ ६॥ तेसासात्तदावतरा ॥ रद्विणाडेसासुखर ॥ तेसाकं
 ठजिमधुरा ॥ कंपस्वरेंगातजसे ॥ ७॥ दीक्षित्यायनमंजुका ॥ तरस्तजालेविमंडला ॥ पाता
 क्षांडुनिफाणिपाढा ॥ वरियउभावितसे ॥ ८॥ लहस्तजालेप्रभंडजा ॥ वेघलात्वंडचाह
 रिण ॥ अद्वाक्तवनिवेविहंगमा ॥ चारधुक्तवरले ॥ ९॥ अयोध्यापतिचिराणि ॥ तन्मय
 होउनिऔक्तश्रवणि ॥ अद्वाक्तव्यामधुना ॥ मंजुक्त्यनिउमटन ॥ १०॥ जोअजबितनि
 र्गुण ॥ कमक्षणिमित्रकुक्तमुषण ॥ मत्कहद्याक्तमिलेहपुण ॥ जक्तद्वर्णसर्वसस्ति ॥ ११॥
 जोमंगक्तधाममंगक्तकारक ॥ जोमंगक्तमिनियनायक ॥ मंगक्तजननिउष्ट्यारक ॥

(८)

Rajarade Sankeshwar Dhadh, Dhule and the Yashoda Devanand
 "Jorat" Number
 १०३

॥श्रीराम॥
१७॥

४

प्रत्नापकिश्चिरामा ॥१९॥ जेद्विपंचमुखदर्पहारण ॥ जोचंडिकाकोइउअंजना ॥ अर्गवर्गवेगज
विदारण ॥ पंचाननबरमिरांतकजो ॥ २०॥ जोनकिजयाच्चित्तिकका ॥ रचिबनंतब्रह्माउमा
द्वा ॥ मेधःशामधनसांवका ॥ अतकर्त्तिलिङ्गाजयाच्चि ॥ २१॥ सच्चिदानंदतनुनिष्ठकं क्र ॥ ॥विजर्ण॥
जोपित्रुबाज्ञाप्रतिपाक्तक ॥ जोमायाचक्कचाक्तक ॥ जगद्वद्यजगद्गुता ॥ २२॥ जोपञ्चमुता
शिवेगकासचिरा ॥ जोपञ्चवरिवाच्चिरघाविर ॥ जेथेद्विपंचरथराजपुत्र ॥ कपटमगव
धुंगेला ॥ २३॥ जेद्विपंचवहनदुराचार ॥ पणकुटितप्रवेशठातस्करा ॥ भुगस्तिचेरलसु
हर ॥ हननिनेलेनकक्तां ॥ २४॥ त्यातर ॥ मागकाढिता ॥ किस्तिहसआलारघुनाथ
॥ २५॥ शक्तसुतवधोनबकस्माता ॥ अर्कजराजिस्त्तापिला ॥ २६॥ त्याशितावल्लभाचाकि
कर ॥ दासानुदासयेकवांनर ॥ तेषेच्चिगानुनिलंकापुर ॥ अओकवनाजालाभस ॥
॥ २७॥ असोओसेषेकलांगायन ॥ आनंहमयभुतनयेचेमना ॥ मगद्वह्नातकिउभिराहोन ॥

॥आगारण॥

करिलनमनतयाते ॥९७॥ श्वपेष्यव्यतुंतरवरपुर्णा ॥ कोणकरितोतुजमाजिकीर्तन ॥ त्या
सिजननिधब्यधब्य ॥ त्यासिसदांजसोक्खाणा ॥ नलागेविद्वक्त्वांति ॥९८॥ जोक
रितोतुजमाजिकीर्तन ॥ त्योचेपाहिनीमवरन ॥ कैसाबाहुभनमोहन ॥ धरिनचरण
बादरे ॥९९॥ जादिरामकीर्तनबाबु ॥ यस्त्रिसाकृदेक्खियनपेडा ॥ चापिमुखितयापुद्दें
दादिहोउनिराबति ॥१००॥ औस्त्रिजगन्मात बाबु ॥ तोंउगचराहिलाहनुमंत ॥ न्यो
लत्विकाहिमात ॥ पाहेलतस्तजानकि ॥ १०१॥ येष्यकापठ्यदिसेपुणी ॥ कोणकरितोनक
केकीर्तन ॥ बाहेरनभेटेयेउन ॥ तरिखार् ॥ १०२॥ गत्याजिनमि ॥१०३॥ अस्यंतपुश्चाजलिगोरीया
मुद्रिकायातलिमम्भनगरीट ॥ श्वपेजयाध्यापतिजगडेटि ॥ नकेभेटिसुझोजाता ॥१०४॥
मगजनक्खालजेनतेवेक्खा ॥ वेणिहंडकाढिला ॥ गठपारावेगिंघातला ॥ त्राणद्याव
याकारणे ॥१०५॥ श्वपेजयाध्यापतितुंजिवण ॥ श्वपेयकनेठेविंप्राण ॥ औसेबोलोनियाव

(8A)

।५३॥

॥८॥

१

चन।जनकुञ्जासरसावलि॥५॥वैपिदंडकादुबि॥वृक्षाहुक्तियेवाद्येत्यहणि॥
राघवत्रियतेहरवोनि॥वहुतमनिगजवजिला॥६॥जोनकित्यगिलस्येप्राण॥मगका
यसांगोरघुनंहना॥भरधायजामनमोहना॥धोवदोक्तियेवेक्ते॥७॥बंतरिंजारवि ॥विजई॥
लेरामचरण॥बुद्धिप्रवर्तकस्त्रणोन॥मगतेसंचक्तेलेउडाण॥गगनपंथेत्वेक्ते॥८॥
हुबुमंतस्त्रणशिलास्ति॥पैलजारुकरुपति॥बैसेबैक्तांचिदशालि॥उर्ध्वपं
थेविलेक्ति॥९॥मगमात्तिरखालेउलराज॥करेरताजालासाणंगनमन॥जगब्मा
ताबोलेवचन॥होक्तेन्द्र्याणचंडार्के-वरा ॥१०॥जोडेनियांहेन्हिकर॥उभासहिला ॥११॥
सितेसमोरा॥ह्यणेकेन्द्र्याणन्तपरघुविर॥किस्किट्टसिमुम्बिबोहु॥१२॥मिश्रीरामा
चाबनुचर॥हुमंतनामवायुकुमर॥मोतेलुजकारणेण्टकानगर॥धोडेकिचेसर्व
क्ति॥१३॥शिलेसआनंहजालाथोर॥डोसाबहुताहिवसगेलाकुमर॥तोमेटतांहृष्वबपर॥

॥४०॥

तैरिनिर्मरजाहाति ॥१३॥ जैसाबवर्षणिवर्षधन ॥ किमत्यसमईसुधारसपान ॥ किंदुकींजा
 लेंद्रीन ॥ हिरसिथुचेबकस्मात ॥१४॥ असोपंचवटिपासुनिवर्तमान ॥ रामेंडेलिघोकलिपुणी ॥
 शितेप्रतिप्रसंजबसुना ॥ कथिताजालातेवेढे ॥१५॥ नरायुनव्यरोबकंधवधिता ॥ वकिमस्तगि
 सुप्रिवस्त्वपिला ॥ अपारमेकउनहीरमेका ॥ सधजाट्टाश्रीराम ॥१६॥ आरउनवगुणतप
 ॥ रामसर्वहांकरिविलाप ॥ अवापहपापाणपाह्या ॥ शित्ताह्यणानिआलिंग ॥१७॥ तुवांजेबकं
 कारटकिले ॥ लेमिश्रीरामापुढेंगेविला ॥१८॥ कक्षेवातेवेढे ॥ लोमजनवर्षवेसर्वधो ॥१९॥
 लुजकारणसौमित्र ॥ दुःखभरिनअहोरात ॥ तरिमानचिवाटनिरंलरा ॥ बाह्याहोप्रितिबें ॥२०॥
 असाजेबलांसमाचार ॥ जानकिसदाटलागाहेवर ॥ ह्यणपरमहुपाकुरघुविर ॥ मजकारण
 श्रमतजस्य ॥२१॥ अयोध्येहुनियेतांहुमंता ॥ श्रीरामतरबालेतत्त्वता ॥ मिमगंराहेन्चाल
 ताँ ॥ उभराहालिमजकारण ॥२२॥ बहुश्रमलिह्यणोन ॥ रामकुरवटिमासेंवहन ॥ बोलताँ

१८

१९

॥श्रीराम॥

॥३॥

(१०)

वित्तेशिआत्मेन्द्रदना। सद्गदहोउनस्फुंदलजसे॥२२॥ लोनकिसलणेहनुमंत। आतांशोककराव
किमर्थ। सत्वरयईलरखुनाथ॥ दशमुखासवधाकय।॥२३॥ तुजादिपुरषाचिच्छिदशकि॥ प्रणव
स्तपणिमुक्त्रष्टुति॥ तुझेजाझ इनेवर्तीति॥ किर्णचिर्दशद्वादिक॥२४॥ भक्ततारावयानिधीरे॥ ॥विनई॥
होघअवतरलेप्तिष्ववरि॥ अधिंवियोगदोघंसित्तर। जालाचिनाहिंतत्त्वता॥२५॥ यावरे
भुमिड्याबोलेक्वन॥ तुश्रीरामद्विविचारिपण॥ तुज्जप्रतिअंतरखुण॥ याघवेंकाय
संगीतलि॥२६॥ येरह्यणेकैक्याद्यहंतार॥ नटिकांतकेजापुन्माकीरि॥ तुलवन्ज्ञलेने
सविलनिधीरि॥ खुणबरिवोक्तरवहे॥ ॥२७॥ भैसंजैकतांजनकहुहता॥ ह्यणेसरवयाह
हुमंता॥ श्रीरामाचातुंजावडता॥ कैटिगुणद्विससितुं॥२८॥ परितुहिसशिसुहम॥ जेरजै
साचकायपूवंगम॥ हुलंकानगरधोरपम॥ तुम्हाकैसेजायोप॥२९॥ जैसेशित्तेचेवचनजैकि
ले॥ हनुमंलेभिसपत्रद्वरकैले॥ मंडाचकातुल्मदरिकैले॥ ॥विशाळकपमालतिचे॥३०॥

किं माहामेरत्वं जन्मता ॥ रात्रि सवधावया समस्ता ॥ अवतरलात्रक्य छतांता ॥ वान्नरवेदा
 धरोनियो ॥ ३१ ॥ औसदिवो नन्तद्वावतारा ॥ शिवाहृष्णोहक्षेव कर्क्षुरा ॥ रामकार्योला
 ग्निनिर्धारा ॥ अवतरलायेण सर्पेण ॥ ३२ ॥ इन्द्रग्रन्थणमाहान्सति ॥ नेत्रेकाघालिबपाल
 थि ॥ परिक्रोपेलन्त्रिभुवनपति ॥ आज्ञाहित्यलिङ्गहिमडा ॥ ३३ ॥ जगन्मातेमंगकश्चिग
 नि ॥ मजदुनिष्ठुप्रतापतरणि ॥ औसदावन्नरदि स्कदाभुवनि ॥ रघुपतिजवीक्षसति
 पै ॥ ३४ ॥ जोबुवंतनकनिकवायुकुमरा ॥ रथातितपतापभुरा ॥ काकासदिस्त्रावरणारा ॥
 राघवासवेयतिलो ॥ ३५ ॥ शिवाहृष्णहृष्णमति ॥ येवढासागरकेविंतरलादि ॥ माते
 राममुद्देनेभानायादिं ॥ अणिलेमज औलतिरा ॥ ३६ ॥ मर्गिंश्च मजालाबहुता ॥ तु द्या
 हर्षोनहारपलान्समस्ता ॥ परिजालोंजसेहृष्णिता ॥ ककेंयेद्येहसति बहु ॥ ३७ ॥ परह
 संडेकास्पदोता ॥ सर्वथानेद्यमिनिष्ठिता ॥ आतां आज्ञाहितेलिता ॥ निजहस्तेद्येईनीमि ॥ ३८ ॥

। अशीराम ॥
। १९० ॥

(१)

उपीस्वोते श्रीरामललबा ॥ समिरस्पर्शीनशकेयावना ॥ सहिसहस्ररात्मसरक्षण ॥ ठे
विलयेथें लकड़े ॥ ४३ ॥ हनुमंतजैकलांसेजवसरिं ॥ गडबडालोकेघरणिवरि ॥ ककड़ा
हारंविणवाहेगिरा ॥ निधायाहातप्राणमाज्ञे ॥ ४४ ॥ अहोमध्येचबालेमरण ॥ अंतरक्षे
धुपित्तिचेचरण ॥ आतांतवश्रुच्छासांगे लकोण ॥ कौंशन्यालजाशिजाउन्वै ॥ ४५ ॥ क
कवृष्टदेखोनद्रष्टि ॥ माझेंचिलहातसकारा ॥ ऐसंवरतसेपोटि ॥ वनचबवदेंसा
उवावे ॥ ४६ ॥ जैसेबोलेहनुमंता ॥ क्षणयव पटिलानिचेष्टि ॥ नेत्रगरगरांमोवडि
स ॥ मुखपसरिलेफकालग्जिं ॥ ४७ ॥ हौ वेनिलेवेक्कि ॥ जगन्मातासद्दद्जलि ॥
आहास्मणोनिधाविनलि ॥ कुरवचित्तह्यपाकरा ॥ ४८ ॥ ल्लेणकपिदांठिंठिं ॥ पटिलि
फकेंतरतकवीटि ॥ तेपाहोनियांयेकवीटि ॥ उद्दरञ्जिपुरतिंच ॥ ४९ ॥ वारेवस्वढिरि
जाण ॥ लरिलुजमाजिजसेबाण ॥ पटिलिंपकेंतेवेचुन ॥ उद्दरनिर्वाहकीरंकोर ॥ ५० ॥

। १९० ॥



मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००९ (महाराष्ट्र)
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com